RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015-17

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्ष: 76, अंक : 5 एक प्रति 2 : रुपये

कुल पृष्ठ : 8

रविवार 5 मई, 2019

विक्रमी सम्वत् 2076, सृष्टि सम्वत् 1960853120

दयानन्दाब्द : 195 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये

आजीवन शुल्क : 1000 रुपये

दूरभाष : 0181-2292926, 5062726

E-mail: apspunjab2010@gmail.com,

www.aryapratinidhisabha.org

वर्ष–76, अंक : 5, 2-5 मई 2019 तदनुसार 22 वैशाख, सम्वत् 2076 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

दीर्घ जीवन का उपाय

ले०-स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

जीवतां ज्योतिरभ्येह्यर्वाङ् त्वा हरामि शतशारदाय।
अवमुञ्चन्मृत्युपाशानशस्तिं द्राघीय आयु: प्रतरं ते दधामि।।

-अथर्व० ८।२।२

शब्दार्थ-जीवताम् = जीवितों के **ज्योति:** = प्रकाश को **अर्वाङ्** = सामने होकर **अभि आ इहि** = उद्योग से प्राप्त कर। मैं **त्वा** = तुझको **शत-शारदाय** = सौ वर्ष के जीवन के लिए **आ+हरामि** = चलाता हूँ। **अशस्तिम्** = अप्रशस्तता, गन्दगीरूप **मृत्युपाशान्** = मौत के फन्दों को **अवमुञ्चन्** = दूर कराता हुआ **ते** = तुझे **प्रतरम्** = बहुत बड़ी **द्राघीय:** = लम्बी **आयु:** = आयु **दधामि** = देता हूँ।

व्याख्या-मनुष्य की साधारण जीवन-अवधि सौ वर्ष की है, जैसा कि यजुर्वेद [४०।२] में कहा गया है-**'जिजीविषेच्छतꣳ समा:'** [मनुष्य सौ वर्ष जीने की इच्छा करे] प्रकृत मन्त्र में भी भगवान् ने कहा है-**'आ त्वा हरामि शतशारदाय'** = तुझे इस संसार में सौ वर्षों के जीवन के लिए लाया हूँ। जैसे जलते दीपक से दूसरे दीपक जलाये जा सकते हैं, ऐसे ही जीते-जागतों से ही जीवन-ज्योति मिल सकती है। इसी भाव से कहा है-**'जीवतां ज्योतिरभ्येहि'** = जीते-जागतों से जीवन-प्रकाश ले, अर्थात् दीर्घजीवी लोगों के पास उठो, बैठो, उनकी दिनचर्या का निरीक्षण करो कि कैसे उन्हें दीर्घ जीवन मिला। जैसी सङ्गति होती है, प्राय: वैसे ही आचार-विचार बनते हैं, अत: दीर्घजीवन के अभिलाषियों को दीर्घजीवियों का सङ्ग करना अतीव उपयुक्त है। इसी प्रकार मरों का चिन्तन छोड़ देना चाहिए। जो मर गये, सो गये। इस रूप में वे आ नहीं सकते। उनको पुन:-पुन: स्मरण करने से मरण के संस्कार ही पुष्ट होंगे। अत: वेद कहता है-**'मा गतानामा दीधीथा ये नयन्ति परावतम्।'** [अ० ८।१।८] मरों का चिन्तन मत कर, वे जीवन से परे ले-जाते हैं। प्रत्युत **'आ रोह तमसो ज्योति:'** [अ० ८।१।८] = मृतक चिन्तनरूप अन्धकार से ऊपर उठकर जीवन-ज्योति प्राप्त कर।

जीवन के विघ्नों का नाम मृत्यु या मृत्युपाश है। दीर्घजीवन के अभिलाषी को इन मृत्युपाशों को काटना होगा। वेद कहता है-**'अवमुञ्चन् मृत्युपाशानशस्तिम्'** = अर्थात् अशस्ति=गन्दगी, दुराचाररूप मृत्युपाशों को छोड़।

समस्त अशस्त=निन्दित आचार, यथा व्यभिचारादि, युक्त आहार-विहार का अभाव जीवन को घटाने वाले हैं। ये मृत्यु को समीप लाने वाले हैं, अत: इनका त्याग ही करना चाहिए। अशस्ति के विपरीत ब्रह्मचर्य=परमात्मा के आदेशानुसार आचार, मौत को मारने का प्रबल हथियार है। जैसा कहा है-**'ब्रह्मचर्य्येण तपसा देवा मृत्युमुपाघ्नत' (अ० ११।५।१९)** = ब्रह्मचर्यरूपी तप के द्वारा विद्वान् मृत्यु को मार भगाते हैं। ब्रह्मचर्य से दीर्घजीवन मिलता है, जैसा कि वेद में आदेश है-**'यां त्वा पूर्वे भूतकृत ऋषय: परिबेधिरे। सा त्वं परि ष्वजस्व मां दीर्घायुत्वाय मेखले।।'[अ० ६।१३३।५]** = हे मेखले [कौपीन]! जिस तुझको सत्यकारी पूर्ण ऋषि बाँधते हैं, वह तू मुझे दीर्घजीवन के लिए आलिंगन कर। मेखला ब्रह्मचर्य का बाह्य चिन्ह है। दीर्घजीवन-अभिलाषी को ब्रह्मचर्य धारण करना चाहिए और उसके साधनों मेखलाबन्धन-आदि में कभी प्रमाद न करना चाहिए।

(स्वाध्याय संदोह से साभार)

यो भूतानामधिपतयो विशिखास: कपर्दिन:।
तेषाꣳसहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि।।

-यजु० १६.५९

भावार्थ-सब मनुष्यों को चाहिये कि, जो वेदों के विद्वान, सबके शुभचिन्तक, परमात्मा के सच्चे प्रेमी, महात्मा, मुण्डित संन्यासी और ऐसे ही जटिल ब्रह्मचारी लोग हैं, उन की प्रेमपूर्वक सेवा करें और उनसे ही वेदों के अर्थ और भाव जान कर, परमात्मा के सच्चे प्रेमी भक्त बनें। महानुभाव महात्माओं की सेवा और उनसे वेद उपदेश लेने के लिए कहीं दूर भी जाना पड़े तब भी कष्ट सहन करके उनके पास जाकर, उनकी सेवा करते हुए उपदेश धारण कर अपने जन्म को सफल करें।

कया त्वं न ऊत्याऽभि प्र मन्दसे वृषन्।
कया स्तोतृभ्य आ भर।।

-यजु० ३६.७

भावार्थ-हे परम दयालु परमात्मन्! जिस बुद्धि और युक्ति से आप धर्मात्मा ज्ञानी पुरुषों को सुखी करते और उनकी सब ओर से रक्षा करते हैं, उस बुद्धि और युक्ति को हमको भी जताइये।

अग्निर्देवता वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता रुद्रा देवाऽऽदित्या देवता मरुतो देवता विश्वेदेवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता।।

-यजु० १४.२०

भावार्थ-इस संसार में जो अच्छे गुणों वाले पदार्थ हैं, वे दिव्य गुण कर्म और स्वभाव वाले होने से देवता कहाते हैं, और जो सब देवों का देव होने से महादेव, सबका धारक, रचयिता और रक्षक, सबकी व्यवस्था और प्रलय करने हारा सर्वशक्तिमान् दयालु न्यायकारी उत्पत्ति धर्म से रहित है, उस सबके अधिष्ठाता परमात्मा को सब मनुष्य जाने, उसी की ही सबको प्रेम से उपासना करनी चाहिए।

परमात्मा की स्तुति

ले.-श्रीमती मृदुला अग्रवाल- कोलकात्ता

''स्तुति'' का अर्थ है गुणगान करना। ''परमात्मा की स्तुति करने का अर्थ है-'स्तुति' शब्द से उसके गुणों का वर्णन करना या बयान करना तथा परमात्मा की भक्ति में प्रवेश करना। परमात्मा की स्तुति करने से, उसके गुणों का कीर्तन एवं मनन करने से, उसके उपकारों का धन्यवाद करने से उसके गुण, कर्म और स्वभाव मनुष्य में भी आ जाते हैं एवं उसके प्रति श्रद्धा भी उत्पन्न होती है। उसकी स्तुति से मानव की चित्त-वृत्ति निर्मल और शुद्ध हो जाती है। मनुष्य पापों से मुक्त हो जाता है। पाप-वृत्तियाँ भी दूर हो जाती है। वह राग-द्वेष के गहरे नद को भी पार कर लेता है। 'स्तुति' करना मानव-स्वभाव है। पशु-पक्षी आनन्द से उछल-कूद तो कर सकते हैं परन्तु वे परमात्मा की स्तुति करने में सक्षम नहीं होते। इसीलिये यह कार्य सिर्फ और सिर्फ मानव का ही है। अगर हम प्रत्येक कार्य करते समय यह सोच लें कि परमात्मा हमारे साथ है तो असम्भव से असम्भव कार्य भी सम्भव हो जाता है। परमात्मा में दृढ़ विश्वास हो तो हम निडर हो जाते हैं तथा विश्वास से परिपूर्ण व्यक्ति परमात्मा की स्तुति, प्रार्थना और उपासना के द्वारा अपने अन्त:करण को पवित्र बना लेते हैं जो कि एक प्रकार की साधना है। ''परमात्मा सर्वज्ञ है, सबकी स्तुति के योग्य है। अन्त:करण के मध्य में प्राप्त होता है। दुराचारी शत्रुओं का नाश करता हुआ सत्कर्मियों को पवित्र करता है।''-ऋग्वेद, मंडल ६, सूक्त २७, मन्त्र-१।।

परमात्मा हमारे विचारों को भी जानता है, उससे कुछ छिपा नहीं रहता। अगर हम यह सोचकर कोई कार्य करें कि परमात्मा हमें हर वक्त देख रहा है तो हमारे अन्दर से बुरे कर्म करने की प्रवृत्ति दूर हो जाती है। परमात्मा व्यापक होने के कारण सर्वत्र विद्यमान है। जो लोग कर्मयोग और ज्ञानयोग द्वारा अभ्यास करते हैं, वे लोग ही ब्रह्मामृतरूपी दुग्ध को परमात्मारूपकामधेनु से दोहन कर सकते हैं, क्योंकि परमात्मा का साक्षात्कार भी कर्मयोग एवं ज्ञानयोग द्वारा संस्कृत बुद्धि से ही प्राप्त हो सकता है। इसी अभिप्राय से कहा गया है कि ''दृश्यते स्वग्रया बुद्धया सूक्ष्मया सूक्ष्मदर्शिभि:'' अर्थात् उस परमात्मा को सूक्ष्मबुद्धि से सूक्ष्मदर्शी ही देख सकते हैं, अन्य नहीं।

''वह परमब्रह्म तो ऐसा है कि वह गुहा (हृदय) आदि प्रत्येक सूक्ष्मस्थान का अन्तर्यामी है और स्थूल भी ऐसा है कि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड उसके अन्दर समा रहा है। धीर ध्यानी महात्मा उस जगदीश्वर की अनन्त रचनाओं से विज्ञान और उपकार प्राप्त करके मुक्तकण्ठ से आत्मसमर्पण करते हुए उसकी स्तुति करते और ब्रह्मानन्द में मग्न रहते हैं।''-अथर्ववेद, काण्ड-२, सूक्त-१, मन्त्र-१।। जो पुरुष सर्वदा प्रोत्साहन देने वाले, स्तुति के योग्य महान्, सबके अन्त:करण में सूक्ष्मरूप से विराजमान, संसार के अधिष्ठाता परमात्मा को अपना स्वामी समझकर अनेक प्रकार के प्रशंसनीय कर्मों से पुरुषार्थ करके अपने अनुकूल करता है, इस जगत् में उसका कोई भी कुछ नहीं बिगाड़ सकता, क्योंकि ऐसे विद्वानों की रक्षा परमात्मा स्वयं करता है। परमात्मा की न्याय-व्यवस्था वा नियमों के आगे हमें अपना सिर झुकाना चाहिए, क्योंकि जो पुरुष शान्तभाव से परमात्मा के नियमानुकूल चलते हैं, परमात्मा भी उन्हें शान्तरूप से उनके पाप-पुण्य देखकर कर्मानुकूल फल देता है और जो उल्लंघन करते हैं उन्हें दण्ड देता है। परमात्मा नम्रतादि भावों का उपदेश करता है। वह जिनमें दैवी-सम्पत्ति देखता है उन्हें बुद्धियुक्त करता है और जिनमें आसुरी भाव के अवगुण देखता है उनका नाश कर देता है। हम परमात्मा की कृपा से दश इन्द्रिय, दश प्राण, मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार, विद्या, स्वभाव, शरीर और बल-ये अठाईश कल्याणों में प्रवृत्त होकर, उपासनायोग के द्वारा इन सबका सदा सेवन करते रहें, अपनी एवं अपने कुटुम्बियों की रक्षा करें, एवं परमात्मा को सर्वदा नमस्कार करते रहें। संसार की सब वस्तुएँ परमात्मा ने ही बनाई हैं इसलिए हम अपनी सारी स्तुति उन्हें ही समर्पित करें। कामनाओं की पूर्ति करने वाले उस परमात्मा की हम सम्मिलित स्तुति वेदमन्त्रों द्वारा करें। आत्मा व शरीर में कोई कष्ट आता है तो हमें उस परमात्मा की ही याद आती है। अन्न आदि की सम्पत्ति हम उसी से मांगते हैं, क्योंकि अन्न ही हमारा प्राण है। वह सब शरीरधारी प्राणियों को अन्न से पुष्ट करता है। जीवन में किसी तरह के उपद्रव बढ़ जाने से हम उसी को पुकारते हैं, संग्रामों में जो वीर रक्षा के लिये पुकारते हैं, वे उसी को पुकारते हैं। वही हमारा असली मित्र है। स्तुति करने वाले की वह पूर्णरूप से सहायता करता है। जो परमात्मा की स्तुति करता है, उसके चेहरे पर अलग ही तरह की चमक होती है। परमात्मा उसका मंगल करता है। ''मित्र के समान कल्याण कारक, अति प्रिय, निरन्तर व्यापक, जानने योग्य वा हृदयरूपी वेदी में ध्यान करने योग्य, रथ के समान सबके आधार और वाहक, पहुँचाने वाले प्रकाशमान परमात्मा को तू स्तुति कर।''-सामवेद, मन्त्र-४।।

हमें परमात्मा के सद्गुणों का विचार सदैव करते रहना चाहिये, जिससे हम अपने मन, वाणी और शरीर की शुद्धि कर सकें। परमात्मोपासना से मन की, स्वाध्याय एवं वेदाध्ययन से वाणी की एवं जल से शरीर की शुद्धि कर सकें। वाक्-इन्द्रिय अग्नि का प्रधान कार्य है। अग्नि की सहायता से ही हम बोलते हैं। परमात्मा की स्तुति से हमारा बोलने का ज्ञान बढ़ता है, उसे परमात्मा ही बढ़ाता है। मुँह से बोलते-बोलते वह हृदय में स्थापित हो जाता है। हृदय ही सबका वाहन है। परमात्मा ज्ञानियों के हृदय में प्रत्यक्ष होता है। वाणी की मिठास और चेहरे की मुस्कान सबको मुग्ध कर देती है। परमात्मा की स्तुति करने वाला उसके बनाये बच्चों को अर्थात् उसकी प्रजा को अवश्य ही प्यार करता है। वह ही जगत् के हितार्थ चारों वेदों की रचना करता है। ''कठोपनिषद'' में लिखा है कि ''समस्त वेद जिस पद को सब प्रकार से मनन करते हैं, वह ''ओंकार'' है।'' ''ओ३म्'' परमात्मा का नाम है। योगशास्त्र में लिखा है कि परमात्मा का वाचक प्रणव ''ओंकार'' है। ''परमात्मा ओ३म् ही आत्मा के द्वारा जानने योग्य है, उसी को जानकर आत्मा परमानन्द को प्राप्त होता है।''-गीता, अध्याय-१३, श्लोक-१२।। परम ऐश्वर्य वाले परमात्मा के अमृत-रस (तत्त्वज्ञान) को निचोड़कर शोध करके, प्राप्त करके अपना सामर्थ्य बढ़ाना चाहिए, क्योंकि जितना भी सामर्थ्य हमारे जीवन में है वह, परमात्मा की ही कृपादृष्टि है। वह स्वयं प्रकाश स्वरूप है और हमारे जीवन के अन्धकार को मिटाकर प्रकाशस्वरूप बनाता है। हम अपनी विघ्नकारक कुवासनाओं को परमात्मा के उत्तम गुणों और ऐश्वर्यों को साक्षात् करके दूर कर सकते हैं।

परमात्मा की स्तुति से भक्तों को आत्मिक बल मिलता है। जीवात्मा चेष्टा कर सकती है, परन्तु आत्मिक बल, शारीरिक बल, प्राणशक्ति, अग्निरूप ऊर्जा परमात्मा से ही प्राप्त होती है। वह वेदवाणियों द्वारा ज्ञानरूपी बल प्रदान करता है। जो लोग परमात्मा से विमुख होकर वेदविरुद्ध अधर्माचरण करते हैं, ऐसे पापीजन अनेक प्रकार के रोगादि दु:ख से पीड़ित रहते हैं। ''मनुष्यों को वेदमन्त्रों के साथ ईश्वर की स्तुति वा यज्ञ के अनुष्ठान को करके जो ईश्वर भीतर-बाहर सब जगह व्याप्त होकर सब व्यवहारों को सुनता वा जानता हुआ वर्त्तमान है, इस कारण उससे भय मानकर अधर्म करने की इच्छा भी न करनी चाहिए। जो हम लोगों के दूर वा निकट में यथार्थ सत्यासत्य को सुनने वाले विज्ञान स्वरूप अन्तर्यामी जगदीश्वर है इसी के लिये ज्ञान को प्राप्त कराने वाले मन्त्रों को हम नित्य उच्चारण वा विचार करें।''-यजुर्वेद, अध्याय ३, मन्त्र-११।। परमात्मा की स्तुति-प्रार्थना-उपासना के ८ मन्त्र महर्षि दयानन्द जी ने प्रार्थना मन्त्रों के रूप में हमें यज्ञ व अग्निहोत्र के समय पहले उच्चारित करने के लिए दिये हैं। परमात्मा की स्तुति तो वैदिक-सन्ध्या के रूप में सर्वोत्तम है। महर्षि दयानन्द प्रणीत संध्या के जो मनसा-परिक्रमा के ६ मन्त्र हैं, उनसे परमात्मा की विद्यमानता का आभास होता है, क्योंकि वही एक सर्वव्यापक है। वैदिक-सन्ध्या के प्राणायम-मन्त्र को हम, प्रात: एवं सायं, मन लगाकर, परमात्मा के गुणों का स्मरण करते हुए, उसमें स्वयं को मग्न करते हुए, उस परमपिता की महिमा को विचारकर, गाकर, प्रकाशित होकर, अपने हृदय में धारण करके सदा तेजस्वी, सत्यवादी, यशस्वी एवं आनन्दित होते हैं। परमात्मा आनन्दमय है। एकाग्रता से सम्पूर्ण आनन्द प्राप्त होता है। वह संयमी लोगों को आनन्दित करता है। उस परमात्मा की शक्ति से समुद्र में बड़वानल, मेघ में बिजुली, मनुष्य में अन्न-पाचक-अग्नि और पत्थर में चकमक, औषधियों में फलपाक-अग्नि आदि अद्भुत उपकारी शक्तियाँ वर्त्तमान है, इन सबके सत्य-प्रेरक परमात्मा को हमारा शत-शत प्रणाम है। परमात्मा के सदृश कोई उत्तम पदार्थ नहीं है। जितना धर्मयुक्त पुरुषार्थ से हमें पदार्थ प्राप्त हों, हमें उन्हीं से संतुष्ट रहना चाहिए।

''जिस परमात्मा का तेज सब

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सम्पादकीय

चरित्रवान युवा पीढ़ी ही राष्ट्र का भविष्य है

वर्तमान समय में समाज के दूषित वातावरण को देखकर हर व्यक्ति का यह कर्त्तव्य बन जाता है कि वह राष्ट्र की परिस्थितियों के सम्बन्ध में चिन्तन करें। समाज एवं राष्ट्र सम्बन्धी समस्याओं पर विचार करते हुए उन समस्याओं का समाधान ढूंढने का प्रयास करें। आज की युवा पीढ़ी में किन-किन गुणों का विकास करने से राष्ट्र का भविष्य उज्जवल होगा। इन सभी बातों पर विचार करने से यह बात सामने आती है कि राष्ट्र के उज्जवल भविष्य के लिए युवा पीढ़ी का चरित्रवान होना सबसे आवश्यक है।

चरित्र के विकास के लिए इच्छा शक्ति का होना बहुत आवश्यक है। जिसमें इच्छा शक्ति का अभाव होता है, वह व्यक्ति उन्नति नहीं कर सकता। जो अपने संकल्पों पर दृढ़ नहीं रह सकता, जिसका अपना कोई स्थाई सिद्धान्त नहीं होता, जो अपनी बुद्धि का सदुपयोग नहीं करता, उस व्यक्ति में इच्छा शक्ति का अभाव होता है। ऐसे मनुष्य किसी भी बड़े कार्य को करने में अक्षम होते हैं। ऐसे व्यक्ति किसी का भला नहीं कर सकते। ऐसे व्यक्तियों से अपना भला नहीं होता तो वे समाज का क्या भला कर सकते हैं। एक चरित्रवान व्यक्ति के लिए दृढ़ इच्छाशक्ति का होना आवश्यक है। बालकों को अपना निर्माण करने का अवसर देना चाहिए। जो लोग उन्हें अपना आत्मनिर्माण करने का मौका नहीं देते, कठिनाईयों को सहन करने का अवसर नहीं देते, ऐसे लोग उनके चरित्र विकास तथा उन्नति में सबसे बड़े बाधक बनते हैं।

राष्ट्र की उन्नति के लिए चरित्रवान युवा पीढ़ी का होना अति आवश्यक है। युवा पीढ़ी किसी भी राष्ट्र की अमूल्य सम्पत्ति होती है। जो इस युवा पीढ़ी को बर्बाद कर देता है, नशे की दलदल में ढकेल देता है, वह राष्ट्र कभी भी उन्नति नहीं कर सकता। वर्तमान समय में युवा पीढी को नशे से बचाने की सबसे बड़ी आवश्यकता है। आज की युवा पीढ़ी को उसके कर्त्तव्य का बोध कराने वाला कोई नहीं है। स्कूल में भी इस प्रकार की शिक्षा नहीं मिल रही है जिससे विद्यार्थी के अन्दर अच्छे गुण विकसित हो, उसके अन्दर नैतिक मूल्यों की वृद्धि हो। आज की युवा पीढी को चरित्रवान बनाने के लिए माता-पिता और अध्यापकों को अपनी जिम्मेदारी को समझना होगा। किसी भी बालक के जीवन निर्माण में उसके माता-पिता और अध्यापकों की प्रमुख भूमिका रहती है। जो इस भूमिका को निभाते हैं, अपने कर्त्तव्य का वहन करते हैं, वे राष्ट्र की उन्नति और तरक्की में अपना योगदान देते हैं। इसलिए माता पिता और अध्यापकों का कर्त्तव्य है कि वे अपने-अपने कर्त्तव्यों को निभाते हुए बालक और बालिकाओं में ऐसी इच्छा शक्ति उत्पन्न करें, ऐसा आत्मविश्वास जागृत करें जिससे वे कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी अपने पथ से विचलित न हो सके। आत्मविश्वास से युक्त बालक असम्भव से असम्भव कार्य को करने की क्षमता रखता है। किसी कवि ने कहा है कि संसार में तीन प्रकार के मनुष्य हैं- उत्तम, मध्यम और निम्न। निम्न व्यक्ति विघ्नों से भय से किसी कार्य को प्रारम्भ ही नहीं करते। मध्यम प्रकार के व्यक्ति कार्य को प्रारम्भ तो कर देते हैं परन्तु विघ्न आने पर उस कार्य को बीच में ही छोड़ देते हैं। उत्तम श्रेणी के व्यक्ति कार्य को प्रारम्भ करके तब तक नहीं छोड़ते जब तक कार्य सिद्धि नहीं हो जाती। उत्तम प्रकार के व्यक्तियों की इच्छा शक्ति प्रबल होती है। इस इच्छा शक्ति के आधार पर ही वे संसार में महान कार्य कर जाते हैं और संसार में अमर हो जाते हैं। इच्छा शक्ति एक बहुत बडी ताकत है। एक प्रसिद्ध कहावत है कि जहां इच्छा होती हैं वहां राह निकल ही आती है। जिस परिस्थिति में बहुत बड़ी शारीरिक शक्ति से सम्पन्न किन्तु दुर्बल इच्छा शक्ति से व्यक्ति घबरा जाते हैं वहां प्रबल इच्छा शक्ति से मनुष्य दुर्बल शरीर होते हुए भी चट्टान की तरह दृढ़ रहता है। महाराणा प्रताप, वीर शिवाजी, स्वामी दयानन्द, महात्मा गांधी, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस आदि कठिन परिस्थितियों में संघर्ष करते हुए संसार में अपना नाम अमर कर गए हैं। जीवन में कई अवसर आते हैं जब हमारे सामने निर्णय लेना कठिन हो जाता है। अनिश्चय की स्थिति में मनुष्य की समझ में कुछ नहीं आता। मनुष्य सोचता है, विचारता है, सभी प्रकार की युक्तियों का सहारा लेता है और तब अन्तर्द्वन्द के पश्चात किसी एक निर्णय पर पहुंचता है। यह निर्णय हमारी इच्छा शक्ति करती है। युद्ध के लिए तैयार अर्जुन के सामने एक समय ऐसा ही संकट उत्पन्न हुआ था। उसके सम्मुख प्रश्न था कि वह धर्म युद्ध करके अपने आत्मीय जनों की हत्या करे या आत्मीयता के मोह में पड़कर अपने कर्त्तव्य से विमुख हो जाए। सोचा समझा, योगेश्वर श्री कृष्ण के उपदेश को सुना और अन्त में निश्चय किया कि मैं युद्ध में भाग लेकर अपने क्षत्रिय धर्म का पालन करूंगा।

अच्छे चरित्र के निर्माण के लिए इच्छा शक्ति का होना अति आवश्यक है। जो व्यक्ति दृढ़ निश्चय नहीं कर पाता, जो अपने किसी कार्य को तन्मयता के साथ नहीं करता, उसका व्यक्तित्व प्रभावहीन होता है तथा चरित्र दुर्बल होता है। दृढ़ इच्छा शक्ति के द्वारा मनुष्य अपने जीवन में परिवर्तन ला सकता है। जिस व्यक्ति को नशे का सेवन करने या किसी प्रकार के दुर्व्यसन की आदत पड़ गई हैं, ऐसे मनुष्य भी दृढ़ इच्छा शक्ति के द्वारा इस आदत से छुटकारा पा सकते हैं। मनुष्य अगर अपनी इच्छा शक्ति को दृढ़ बना ले और संकल्प धारण कर ले तो असम्भव कार्य को भी सम्भव बना लेता है। नीतिकारों का कहना है कि मनुष्य के सभी कार्य दृढ़ इच्छा शक्ति और पुरूषार्थ से ही सम्पन्न होते हैं। जो व्यक्ति किसी लक्ष्य को लेकर संकल्प करते हैं और उसे पूरा करने के लिए अपना सर्वस्व समर्पित कर देते हैं ऐसे मनुष्य ही राष्ट्र की उन्नति में सहायक होते हैं और राष्ट्र का गौरव बनते हैं। आने वाली पीढ़ियां ऐसे लोगों को अपना आदर्श बनाती हैं और उनके मार्ग का अनुसरण करती हैं। वही राष्ट्र उन्नति कर सकता है जिस राष्ट्र के लोग दृढ़ इच्छा शक्ति से युक्त तथा चरित्रवान होते हैं। ऐसे लोगों के द्वारा राष्ट्र का गौरव बढ़ता है।

आज हमारे देश के नवयुवक इन्जीनियरिंग, विज्ञान, कृषि आदि सभी क्षेत्रों में उन्नति कर रहे हैं परन्तु दुर्भाग्यवश भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी और बेईमानी बढ़ रही है। इसका एकमात्र कारण यह है कि नवयुवकों के चरित्र निर्माण की ओर किसी का ध्यान नहीं है। कभी हमारा देश जिस चरित्र की महानता के लिए विश्व में प्रसिद्ध था आज उसी देश के चारीत्रिक मूल्यों का दिन-प्रतिदिन पतन हो रहा है। चारीत्रिक मूल्यों का पतन होने के कारण ही हमारा सांस्कृतिक पतन हो रहा है, हमारे नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है। चरित्र के नष्ट हो जाने से सब कुछ नष्ट हो जाता है। अतः आज देश के गिरते हुए नैतिक स्तर को उठाने के लिए बालकों का चरित्रवान बनना परमावश्यक है और यह तभी सम्भव है जब माता-पिता और अध्यापक अपने-अपने कर्त्तव्यों का पालन करें और ऐसी शिक्षा दें जो उनके चरित्रवान बनने में सहायक बन सके।

प्रेम भारद्वाज
संपादक एवं सभा महामन्त्री

शुद्ध जल–प्राप्ति हेतु यज्ञ

ले.-पं. वेदप्रकाश शास्त्री, शास्त्री भवन, 4-E, कैलाशनगर, फाजिलका, पंजाब

1. ओ३म् शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।
शंयोरभि स्रवन्तु नः स्वाहा।। यजु. 36/12, अथर्व. 1/6/1

दिव्यगुणों एवं शक्तियों से युक्त जलधाराएं हमारे अभीष्ट सुख की सिद्धि, पवित्रता, पीने एवं रक्षा करने के लिए सुखदायक हों। शान्ति के संचारक और रोगनिवारक ये जल हमारे अन्दर और बाहर सर्वतः सुख की वर्षा करें।

2. ओ३म् आपो हिष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन।
महे रणाय चक्षसे स्वाहा।। यजु. 36/14, 11/50, अथर्व. 1/5/1

निश्चय ही ये जल सुख एवं कल्याण उत्पन्न करने वाले हैं। यह जल हमारे अन्दर बल एवं प्राण शक्ति धारण करें। महान् रमणीय दर्शनशक्ति धारण करें। वस्तुतः जल के सम्यक् प्रयोग से, शारीरिक, मानसिक, आत्मिक प्राणशक्ति की प्राप्ति होती है। स्वास्थ्य एवं सौन्दर्य में वृद्धि होती है।

जल में एक ऐसा अमृत रस है जो अद्भुत तृप्ति अनुभव कराता है। शुद्ध जल से प्राप्त होने वाली तृप्ति अन्य स्वादिष्ट पेय पदार्थों से प्राप्त नहीं होती। अतः अनशनकर्ता भी जल का पान अवश्य करते हैं। व्रत-उपवास करने वाले भी जल पीते हैं।

3. ओ३म् यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः।
उशतीरिव मातरः स्वाहा।। यजु. 36/15, 11/51 अथर्व. 1/5/2

जैसे वात्सल्यमयी माता अपनी सन्तान को अन्न, दूध आदि रसपूर्ण पदार्थों से पालन करती है वैसे ही हे जलो! जो तुम्हारा अत्यन्त सुखकारी आनन्ददायक रस है, हमें उसका सेवन कराओ।

4. ओ३म् पयः पृथिव्यां पयः ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः।
पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यं स्वाहा।। यजु. 8/36

भगवन्! पृथिवी पर और पृथिवी के अन्दर प्राप्त जल शुद्ध और पवित्र हो, पृथिवी पर दुग्धादि पदार्थ पर्याप्त मात्रा में हों, कोई कमी न रहे। ओषधियों में लाभदायक शुद्ध रस हो। द्यौलोक अर्थात् सूर्यलोक में भी शुद्ध जल व्याप्त हो। अन्तरिक्ष में जलीयतत्त्व अपने शुद्ध रूप में विद्यमान रहे अर्थात् वह किसी भी प्रकार से प्रदूषित न हो। सभी दिशाएं उपदिशाएं, विदिशाएं हमारे लिए शुद्ध, पवित्र, निर्मल, हितकारी और स्वास्थ्यकर जल से परिपूर्ण हों।

5. ओ३म् अपो देवीरूपसृज मधुमतीः अयक्ष्माय प्रजाभ्यः।
तासामस्थाद् उज्जिहतां ओषधयः सुपिप्पलाः स्वाहा।। यजु. 11/38

हे परमात्मन् देव! आप दिव्यगुणयुक्त जलों का समीपता से सृजन करो। आपकी कृपा से शुद्ध, पवित्र, स्वच्छ गुणों से युक्त जल हमें समीप में ही सुलभ हों। जहां हम रहते हैं वहां उत्तम जल सुप्राप्य हों। ये जल प्रशंसित और माधुर्यपूर्ण हों। ये जल सभी सन्तानों, प्रजाओं के लिए यक्ष्मा आदि रोगों से रहित हों। इनके सेवन से यक्ष्मादि रोग दूर हो जाएं। उन जलों के चारों ओर ठहरने के स्थान से उत्तम फलों वाली ओषधियां उत्पन्न हों। इन जलों से सींचे गए क्षेत्रों में उत्तम फलों वाली ओषधियां उत्पन्न और विकसित हों।

6. ओ३म् कल्पन्तां ते दिशः तुभ्यमापः शिवतमाः तुभ्यं भवन्तु सिन्धवः।
अन्तरिक्षं शिवं तुभ्यं कल्पन्तां ते दिशाः सर्वाः स्वाहा।। यजु. 35/9

हे मनुष्यो! ये दिशाएं तुम्हारे लिए सुखकारी होने में समर्थ हों। तुम्हारे लिए कल्याणप्रद हों। नदियां और समुद्र तुम्हारे लिए सुखदायक हों। अन्तरिक्ष कल्याणकारी हों। ये ईशानादि सभी उपदिशाएं कल्याण प्रदान करने में समर्थ हों।

7. ओ३म् शं न आपो धन्वन्याः शमु सन्त्वनूप्याः।
शं नः खनित्रिमा आपः शमु याः कुम्भ आभृताः
शिव नः सन्तु वार्षिकीः स्वाहा।। अथर्व. 1/6/4

निर्जल देश के जल हमारे लिए सुखप्रद हों। जल वाले स्थान के जल सुखदायक हों। खनती या फावड़े से खोद कर निकाले गए कुएं, बावड़ी आदि के जल हमारे लिए कल्याणकारी हों। जो घड़े में भरे गए अथवा भर कर लाए गए जल हैं वह भी सुखप्रद हों। वर्षा के जल भी हमारे लिए मंगलदायक हों।

8. ओ३म् ये नदीनां संस्रवन्ति उत्सासः सदमक्षिताः।
तेमिर् मे सर्वैः संस्रावैः धनं सं स्रावयामसि स्वाहा।।
अथर्व. 1/15/3

नाद करने वाली नदियों के जो अक्षय (उत्सासः) स्रोत सदा मिल कर बहते हैं, उन सब जल प्रवाहों के साथ हम अपने धन को उत्तम रीति से व्यय करें।

जैसे पर्वतों पर जल के सोते मिलने से वेगवती और उपकारिणी नदियां बहती हैं, जो ग्रीष्म ऋतु में भी नहीं सूखतीं, इसी प्रकार हम सब मिल कर विज्ञान और उत्साहपूर्वक तडित्, अग्नि, वायु, सूर्य, जल, पृथिवी आदि पदार्थों से उपकार लेकर धन बढ़ावें और उसे उत्तम कर्मों में वर्तें।

9. ओ३म् आपो अस्मान् मातरः सूदयन्तु घृतेन नो घृतप्वः पुनन्तु।
विश्वं हि रिप्रं प्रवहन्ति देवीः उदिदाभ्यः शुचिरा पूत एमि स्वाहा।। अथर्व. 6/51/2

माता के समान हितकारी एवं पालन-पोषण करने वाले जल हमें सींचें। घृत को पवित्र करने वाले जल घृत से हमें पवित्र करें। दिव्यगुण युक्त जल निश्चय ही सम्पूर्ण मल को बहा देते हैं। इन जलों से ही शुद्ध और सर्वथा पवित्र होकर ऊपर उठता हूँ।

10. ओ३म् शिवा अभि क्षरन्तु त्वापो दिव्याः पयस्वतीः।
अप्स्वन्तरमृतं अप्सु भेषजं स्वाहा।।
अथर्व० 4/2/14, 1/4/4

मंगलकारी दिव्यगुणयुक्त, उत्तम रसयुक्त जल सभी के लिए निरन्तर बहते रहें। क्योंकि इन जलों में स्वास्थ्यप्रद अमृतरस है और जलों में औषधीय गुण हैं।

11. ओ३म् शुद्धा न आपस्तन्वे क्षरन्तु पवित्रेण पृथिवि मोत् पुनामि स्वाहा।। अथर्व. 12/1/30

हमारे शरीर के लिए सदैव शुद्ध जल बहें। हे पृथिवि! शुद्ध पवित्र व्यवहार से स्वयं को सर्वथा अर्थात् पूर्णरूपेण पवित्र करता हूँ। जैसे निर्मल जल से शरीर शुद्ध करके हम मल का नाश करते हैं वैसे ही अन्तःकरण का मल= राग, ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध, असत्य, छल, कपट आदि को दूर करके पृथिवी पर धार्मिक व्यवहार से आत्मा की शुद्धि करें।

12. ओ३म् इमा आपः शमु मे सन्तु देवीः।
इदमापः प्रवहत अवद्यं च मलं च यत् स्वाहा।।
यजु. 4/1, यजु. 6/17

दिव्यगुणयुक्त ये शुद्ध जल मेरे लिए शान्तिप्रद हों। हे जलो! मेरे इन निन्दनीय आचार-विचार, दुर्व्यवहार, पापकर्म आदि मलों को बहा कर दूर ले जाओ। जिससे मैं अपने शरीर में किसी प्रकार का बाह्य और आन्तरिक मल संचय न होने दूँ।

पृष्ठ 8 का शेष-दयानन्द मठ ढन मुहल्ला...

का उद्घाटन किया। इस अवसर पर सर्वप्रथम महात्मा चैतन्य मुनि जी ने संदेश पुस्तिका में अपना संदेश लिखा। उसके बाद सभी विद्वानों एवं गणमान्यों ने अपना संदेश लिखा। सभी ने इस अवसर पर आयोजकों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दीं। अल्पाहार के बाद कुमारी नन्दिता विज, विभा आनन्द, साक्षी प्रेमी ने पवित्र गायत्री महामंत्र तीन बार उच्चारण कर कार्यक्रम की शुरूआत की। श्री मनोज कपूर, श्रीमती नीरू कपूर, महात्मा जी ने सभी गणमान्य आर्यों के साथ ज्योति प्रज्वलित की। उसके बाद मुख्य अतिथियों कपूर परिवार ने महात्मा जी का अभिनन्दन किया गया। नवोदित भजन गायिका कुमारी एकता, सुरिन्द्र आर्य जी, कुमारी स्तुति अग्रवाल, अर्चना अग्रवाल ने अपने अपने भजनों से माहौल को सत्संगमय, ईशमय, ऋषिमय बना दिया। श्रीमती सुशीला भगत ने महर्षि दयानन्द जी के जीवन पर प्रकाश डाला। आर्य परिवार के बच्चों ने तथा सेजल सेठ ने श्लोक मंत्र और भजन कंठस्थ गाकर सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। श्री सरदारी लाल आर्यरत्न जी ने अपने सम्बोधन में सभी आर्य जनों को सभी आर्य समाजों के कार्यक्रमों में जाने को कहा।

श्री अरविन्द घई प्रधान आर्य समाज माडल टाउन ने अपने सम्बोधन में कहा कि इस मठ में युवा शक्ति आती है,यह सराहना योग्य है। श्री राजेश प्रेमी जी ने दो भजन गाए। एक भजन उनके पिता जी का लिखा था जिसे गाकर सभी का मन जीत लिया। स्वर कोकिला रश्मि घई जी ने दो भजन गाकर सभी को झूमने पर मजबूर कर दिया। महात्मा चैतन्य मुनि जी ने इस अवसर पर कहा कि जीवन सचित्र अदभुत है और अविस्मरणीय है। उन्होंने स्वामी जी के जीवन की बातें बता कर युवा पीढ़ी के लिये इस संग्रहालय को प्रेरक बताया। उन्होंने अपने सम्बोधन में सारे आयोजकों की सराहना की और अपने आशीर्वाद में उनकी सेहत की कामना की। श्री राजीव भाटिया जी ने एक निमंत्रण पत्र पढ़ा जिसे स्कूल कालेजों में बांटा जाएगा। मुख्यातिथि श्री ओम प्रकाश अग्रवाल जी तथा श्री कैलाश गुप्ता जी ने अपने सम्बोधन में सभी को इस कार्य के लिये बधाई दी। श्री अजय महाजन जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में सभी को शुभकामनाएं दी तथा महर्षि दयानन्द जी के नियमों पर चलने के लिये प्रेरित किया। प्रधान श्री कुन्दन लाल अग्रवाल जी ने आए हुये गणमान्य आर्यजन विशेष रूप से महात्मा जी तथा माता जी एवं सभी विद्वानों, भजनोपदेशकों और आर्य जनता का धन्यवाद किया। मंच संचालन महामंत्री श्री राजिन्द्र देव विज ने बखूबी निभाया। महात्मा जी, माता जी, अध्यक्ष अजय महाजन, मुख्यातिथि कैलाश गुप्ता, ओम प्रकाश अग्रवाल, मनोज कपूर नीरू कपूर, श्री सुशीला भगत, रीटा भगत, सुरेश शास्त्री, अरविन्द घई, रश्मि घई, राजेश प्रेमी, सुरिन्द्र जी, श्री सरदारी लाल जी, कु.एकता, राजीव भाटिया, श्री कुन्दन लाल अग्रवाल, कुमारी स्तुति अग्रवाल, अर्चणा अग्रवाल, राजिन्द्र देव विज, राम भुवन शुक्ला, श्री बलदेव आर्य जी को सम्मानित किया गया। इस अवस पर सत्य शरण गुप्ता, अरुण कोहली, प्रकाश सुनेजा, विनीत आर्य, प्रभा सुनेजा, किरण गुप्ता, प्रभा विज, शशि मेहता, चन्द्र प्रभा मल्होत्रा, सुदेश आर्य, मोहन लाल सोनी, आर्य मित्र गुप्ता, श्रीमती मेहता माडल टाउन सहित सभी आर्य समाजों ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया। सभी के सहयोग से कार्यक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

राजिन्द्र देव विज महामंत्री

भारतीय नवोदय के अग्रदूतः राष्ट्रपुरुष महर्षि दयानन्द

ले.-डा. श्रीमती शान्ति मलिक

अद्वितीय प्रतिभा के धनी महर्षि दयानन्द भारत के जननेताओं, कर्मयोगी विचारकों एवं ऋषियों की गौरवमयी परम्परा के जाज्वल्यमान नक्षत्र थे। उनके व्यक्तित्व में मानवता, सत्यनिष्ठा, कर्मयोग, विद्वत्ता एवं लोकनायकत्व आदि गुणों का दुर्लभ सम्मिश्रण था। आडम्बरों से घृणा करने वाले थे सत्यनिष्ठ महात्मा-सन्त एवं सुधारक होने के साथ-साथ उच्चकोटि के राष्ट्रपुरुष एवं राजनीतिज्ञ थे। आर्य-संस्कृति के व्याख्याता वा भारतीयता के पोषक के रूप में भी उनकी देन कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। आज स्वदेशी राज्य, राष्ट्रभक्ति, प्रजातन्त्रात्मक पद्धति, समाजनिर्माण एवं जनजागरण की धूम चारों ओर है। इन अच्छाइयों को उभारने तथा प्रसार देने का श्रेय नवोदय के अग्रदूत राष्ट्रपुरुष महर्षि दयानन्द को ही दिया जा सकता है।

महर्षि दयानन्द आधुनिक युग के राष्ट्रीय पुनर्जागरण एवं राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के वे पहले अनुपम प्रवक्ता थे, जिन्होंने स्वदेशी राज्य, स्वाभिमान एवं स्वदेश-भक्ति के बीज बिखेरे थे। यही नहीं अपने व्याख्यानों एवं रचनाओं द्वारा उसके प्रसार एवं प्रचार में भी आयुपर्यन्त वे प्राणपन से संलग्न रहे। अपनी ओजस्विनी वाणी में पूर्ण स्वराज्य का समर्थन करते हुए एक बार उन्होंने लिखा था, ''कृपा न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है। कोई कितना ही करे, जो स्वदेशी राज्य है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है। ''इसी सन्दर्भ में लार्ड नार्थब्रुक के सुरक्षा देने के अनुरोध को उद्धृत किया जा सकता है। लार्ड के यह कहने पर-''कि आप अपने व्याख्यानों में अंग्रेज़ी राज्य के उपकारों के वर्णन के साथ इस शासन की अखण्डता के लिए प्रार्थना किया करें।'' इनका प्रत्युत्तर था-''श्रीमन्! यह कैसे हो सकता है? मैं तो सायंप्रातः ईश्वर से यह प्रार्थना किया करता हूँ कि इस देश को विदेशियों की दासता से मुक्त करे।'' उनका निर्भय होकर यह नारा लगाना-'भारत भारतवासियों का है' इसी बात का द्योतक है कि स्वराज्य का स्वप्न पहले पहल उसी राष्ट्रपुरुष ने देखा था। पुनः उनकी रचनाओं-'सत्यार्थप्रकाश', 'आर्याभिविनय' तथा 'गोकरुणानिधि' में जहाँ-तहाँ भी स्वदेश की चर्चा हुई है, उनकी उत्कट देशभक्ति का स्रोत फूट पड़ा है। इन कथनों एवं उद्धरणों से स्पष्ट हो जाता है कि महर्षि इसे एक अखण्ड एवं वैभवशाली राष्ट्र के रूप में देखने के उत्कट अभिलाषी थे। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि वे परम राष्ट्रवादी होते हुए भी पूर्णतया प्रजातन्त्रवादी थे। उनका निश्चित मत था कि राज्य की सत्ता वंश-परम्परागत अथवा एकसत्तात्मक न होकर प्रजा द्वारा सर्वसम्मति से नियुक्त योग्य राष्ट्राध्यक्षों द्वारा संचालित होनी चाहिए। महर्षि के अनुसार प्रजातन्त्रात्मक प्रणाली की सफलता तभी है, जब राजा, प्रजा और सभा तीनों पर एक दूसरे का अंकुश वा नियन्त्रण हो।

अतएव कहा जा सकता है कि आज हमारा राष्ट्रीय मन्दिर स्वतन्त्रता की जिस नींव एवं राष्ट्रीय गठन तथा जनजागृति की जिस दृढ़भित्ति पर प्रस्थापित है, उसे तैयार करने का श्रेय महर्षि को ही है। पुनः आधुनिक भारत के राजनैतिक ढ़ाँचे की अधिकतर विशिष्टताएं उसी जगद्गुरु की देन है। विभिन्न विद्वानों एवं महापुरुषों ने उन्हें सच्चे अर्थों में देशभक्त, राष्ट्रवादी एवं राजनीति-शास्त्र की नींव रखने वाला मानकर उनके प्रति श्रद्धा व्यक्त की है।

सामाजिक क्षेत्र में भी महर्षि का स्मरण नवोदय के अग्रदूत के रूप में बड़े आदर से किया जाता है। इतिहास साक्षी है कि वह युगस्रष्टा जब पथ प्रदर्शक के रूप में जनता के समक्ष उपस्थित हुआ, तब उस समय एक ओर राजाओं के नैतिक पतन एवं आलस्य के कारण अव्यवस्था फैली हुई थी, तो दूसरी ओर मठाधीशों की सम्पति हड़प करने की भावना से सामाजिक एवं धार्मिक जीवन विश्रृङ्खलित हो गया था। आत्मप्रवंचना एवं छलछद्म के उस भयावह वातावरण के अतिरिक्त हिन्दुत्व अन्ध-परम्पराओं, निष्प्राण परिपाटियों एवं कुरीतियों-बालविवाह, बहुविवाह, वृद्धविवाह एवं सती-प्रथा आदि में आबद्ध था। यही नहीं जन्मगत जातपात और छुआछूत की अनुल्लंघ्य दीवारें भी खड़ी थी। घर से सत्य की खोज में निकले उस कर्मठ महापुरुष एवं निर्मम सुधारक ने एक महारथी बनकर सामाजिक क्षेत्र में भी क्रांति का मन्त्र फूंका एवं आयुपर्यन्त उन कुरीतियों पर निर्मम प्रहार कर भारतवासियों को आर्यधर्म की ज्योति दिखाकर उदात्त एवं स्वस्थ जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा दी। महर्षि का देश के कोने-कोने में घूमकर राजा-रंक व छोटे-बड़े सभी प्रकार के लोगों से सीधा सम्पर्क स्थापित कर दलितोद्धार एवं वैदिक वर्णाश्रम-व्यवस्था स्थापित करने में लगे रहना तथा जाते समय जनजागरण के इस महत् कार्य का आर्य-समाज को सौंप जाना निस्सन्देह उनके प्रगतिशील व्यक्तित्व को प्रकट करता है। महर्षि का स्पष्ट आदेश था-'आर्यावर्त्त, उठ, जाग समय आ गया है, नये युग में प्रवेश कर, आगे बढ़।'

सांस्कृतिक आदर्शों-धार्मिक, शैक्षणिक एवं मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठापना में नवोदय के अग्रदूत राष्ट्रपुरुष महर्षि दयानन्द का योगदान महत्त्वपूर्ण एवं स्तुत्य है। महर्षि के ग्रन्थों में स्वराज्य और भावनात्मक एकता के बाद जो भी कुछ प्राप्त होता है, उसका मुख्य सूत्र सार्वजनिक धर्म है। यहां कहा जा सकता है कि वे एक ऐसे सर्वहितकारी सनातनधर्म के जन्मदाता थे, जिसमें नवीन लेशमात्र भी नहीं था। यही कारण था कि आर्यसमाज की स्थापना संकीर्ण व साम्प्रदायिक दृष्टिकोण की अपेक्षा आर्यसिद्धान्तों, जीवन-तथ्यों एवं उदात्त राष्ट्रीय भावनाओं को लेकर की गई थी। महर्षि की दृष्टि में आर्य वही था-जो श्रेष्ठ-स्वभाव, सद्-असद् विवेक, परोपकार एवं धर्माचरण से युक्त हो। यही कारण था कि उन्होंने भारतीयों को आर्य, भारत को आर्यवर्त्त और हिन्दी को आर्य भाषा का नाम दिया। अतः आर्यसमाज को एक वर्ग व जाति का नाम देना व सत्यार्थप्रकाश को इसी संस्था की सम्पत्ति बताना अनुचित है। महर्षि ने सत्यार्थप्रकाश में बिना किसी पक्षपात के जो सत्य है उसे सत्य और जो मिथ्या है उसे मिथ्या प्रतिपादित करने का पुनीत कार्य निभाया है। धर्म की इसी व्यापकता एवं यथातथ्यप्रकाश से मुग्ध होकर नोबल-पुरस्कार-विजेता कविवर रवीन्द्रनाथ ने ऋषिवर को आध्यात्मिक क्षेत्र का महान् गुरु स्वीकार किया।

महर्षि जहां सत्य और अहिंसा के पुजारी थे, वहां राष्ट्र की एकता स्थापित करने हेतु वे बड़े से बड़ा त्याग भी कर सकते थे। उनका दृढ़ विश्वास था कि-''एक धर्म, एक भाषा और एक लक्ष्य की प्राप्ति ही भारत की पूर्णोन्नति के साधक हैं।... भिन्न-भिन्न भाषा, पृथक्-पृथक् शिक्षा, अलग-अलग व्यवहार का विरोध छूटना दुष्कर है, पर बिना इसके छूटे परस्पर का पूरा उपकार और अभिप्राय सिद्ध होना कठिन है।'' यही कारण था कि उन्होंने देशी राजाओं और रईसों को समय-समय पर क्षात्र-धर्म का उपदेश देकर एकता के सूत्र में पिरोने के कई सत्प्रयास किए। पुनः महर्षि युगद्रष्टा थे, उन्होंने आज से सौ वर्ष पूर्व यह जान लिया था कि हिन्दी ही राष्ट्रभाषा बन सकती है अतएव उन्होंने अपनी मातृभाषा गुजराती एवं शिक्षा का माध्यम संस्कृत को छोड़कर हिन्दी का आंचल ग्रहण किया और उसे सारे आर्यावर्त्त में आर्यभाषा का नाम देकर प्रसारित किया। इसके अतिरिक्त आर्यस्कूलों में उन्होंने जिस नैतिक उच्चता, सत्याचरण, त्याग, तपस्या एवं कर्मठता की भावना पर बल देकर सापेक्ष्य सहिष्णुता तथा उदारता का प्रशिक्षण देना चाहा, उससे प्रकट हो जाता है कि वे नैतिक पुनरुत्थान द्वारा भारतीय समाज का नव-निर्माण करना चाहते थे। पुनः आर्यजाति के लिए प्रतिपादित महर्षि के दस नियमों का सार ही यही है कि सत्य का अन्वेषण, सत्य का अंगीकार और सत्य का निश्छल प्रचार ही हमारे ज्ञान का आधार होना चाहिए। धर्मान्धता कुबुद्धि है, इसे हृदय में कदापि स्थान न दें। सत्य का प्रकाशन करते हुए पक्षपात-रहित न्याय को हाथ से न जाने दें। मनुष्यमात्र से प्रेम करना मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार है, अतः उनके शोक-दुःख में देश-विदेश, उच्च-नीच, अमीर-गरीब के भाव को त्याग कर उनसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार एवं यथायोग्य वर्ताव करना अपेक्षित है। ये सभी उच्चतम मानवीय आदर्श एवं सर्वहितकारी दृष्टिकोण वस्तुतः पंचशील के प्राख्याता हैं।

संक्षेपतः भारत-निर्माताओं में प्रथमकोटि के युग-पुरुष महर्षि दयानन्द को निश्चित रूप में भारतीय नवोदय का अग्रदूत कहा जा सकता है। बौद्धिक क्रान्ति के जन्मदाता उस महामानव ने तत्कालीन दीनहीन भारतीय समाज को एक नई दृष्टि, नया विचार एवं नई भावना प्रदान की। उस महान् शिक्षक का एक राष्ट्र, एक भाषा, एक मानवधर्म एवं एक लक्ष्य की प्रतिष्ठा द्वारा जनता को राष्ट्रीय, राजनीतिक एवं शैक्षणिक दृष्टि से एकता के सूत्र में आबद्ध करने का सत्प्रयास इसी दिशा की ओर एक सशक्त चरण थी। एतदर्थ उन्होंने स्वयं आदर्श बनकर जहां दीर्घकाल से लुप्त सत्य और भारतीय गौरव को प्रत्यक्ष किया, वह मानव-जीवन की सर्वांगीण उन्नति का व्यावहारिक मार्ग भी प्रदर्शित किया। निस्सन्देह महर्षि के समान सत्य का साधक, निर्भीक सन्त, बौद्धिक क्रान्ति का जन्मदाता, समर्थ शिक्षक, भाव-भाषा के ऐक्य का सशक्त प्रतिष्ठापक महानुभाव मिलना दुर्लभ है।

पृष्ठ 8 का शेष-आर्य समाज बाजार श्रद्धानंद...

मंत्री श्री मुरारी लाल जी, आर्य समाज नवांकोट अमृतसर के प्रधान डा. प्रकाश चन्द्र जी, मंत्री श्री बनारसी दास जी एवं श्री बालकिशन जी एडवोकेट, आर्य समाज हरिपुरा से श्री मेलाराम जी एवं श्री दीनानाथ जी, आर्य समाज अजनाला से श्री मुकेश शास्त्री जी, आर्य समाज लक्ष्मणसर अमृतसर से श्री इन्द्रपाल आर्य जी, आर्य समाज जंडियाला गुरु से श्री स्वतंत्र कुमार जी एवं श्री कमल जी, आर्य समाज माडल टाउन अमृतसर से श्री देशबन्धु धीमान जी एवं श्री सुभाष चन्द्र जी, आर्य समाज तरनतारन, आर्य समाज फतेहगढ चूडिया से श्री सतीश सच्चर जी, श्री पांधी जी, आर्य समाज लारेंस रोड अमृतसर से श्री हरीश ओवराय जी एवं श्रीमती रेणु घई जी, आर्य समाज शक्ति नगर अमृतसर से श्री राकेश मेहरा जी अपने साथियों के साथ पधारे हुये थे। आर्य समाज के सदस्य श्री पवन टंडन जी, डा. रवि कांत जी, श्री संजय गोस्वामी जी, श्री अरुण महाजन जी, श्री इन्द्र पाल जी, माता जगदीश रानी आर्या जी, स्वामी मधुरानंदा जी, श्री विद्या सागर जी, अनु बहल जी, मनवीर कौर, पवन शर्मा आदि उपस्थित थे। इस अवसर पर विशेष रूप से दुर्गियाना मंदिर के महामंत्री श्री अरुण खन्ना जी पधारे हुये थे। अंत में शांति पाठ के पश्चात ऋषि लंगर का आयोजन किया गया।

पुरुषोत्तम चन्द्र शर्मा महामंत्री

महान् क्रान्तिकारी महर्षि दयानन्द

ले.-आचार्य भगवानदेव शर्मा

संन्यासी संसारमात्र की सम्पत्ति होता है। वह सारे संसार का होता है और सारा संसार उसका होता है। उसके लिए न कोई हिन्दू है न मुसलमान, न कोई ईसाई, न कोई पारसी, न कोई अछूत है, न कोई ब्राह्मण, न कोई अमीर है, न कोई गरीब। उसका ज्ञान, कर्म सब प्राणियों के लिए समानरूप से होता है।

विश्व-प्रेम-

ऐसे ही गुणों की साकार मूर्ति, आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती थे, जिनका जन्म आज से 195 वर्ष पूर्व सौराष्ट्र के अन्तर्गत 'टंकारा' नामक कस्बे में हुआ। कई लोग महर्षि जी को तथा उनके द्वारा स्थापित 'आर्यसमाज' को साम्प्रदायिक मानते हैं। ऐसा समझना भारी भूल है। कुछ लोग समाजों में अवश्य प्रविष्ट हो गए हैं जो इस पवित्र संस्था के मंच से साम्प्रदायिक विचारधारा उपस्थित करते हैं, जो उचित प्रतीत नहीं होती। महर्षि दयानन्द विश्व-वन्द्य थे। वे विश्व को सामने रखकर कार्य करते थे। आपने 'आर्य समाज' की स्थापना करते समय सार्वभौम दस नियम बनाते हुए छठे नियम में लिखा-''संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है।'' आगे नवमें नियम में लिखा है-''अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट नहीं रहना चाहिए, किन्तु सब की उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।''

राष्ट्रभाषा-प्रेम-

राष्ट्र की एकता सुदृढ़ करनी हो, तो उसकी एक भाषा होनी आवश्यक है। वह भाषा ऐसी हो जिसको प्रायः सारे राष्ट्र के अधिक लोग समझते हों, बोलते हों और लिखते हों। भारत के लिए वह भाषा 'हिन्दी' ही हो सकती है। आज से सवा सौ वर्ष पूर्व महर्षि दयानन्द ने राष्ट्र में एकता लाने के लिए स्वयम् अहिन्दी-भाषी प्रदेश गुजरात के होते हुए हिन्दी में प्रचार ही शुरू नहीं किया बल्कि अपने 'सत्यार्थ-प्रकाश' आदि महान् ग्रन्थ भी हिन्दी में ही लिखे और वेदों के सर्वप्रथम आर्य दृष्टिकोण को सामने रखकर हिन्दी में भाष्य किए। महर्षि जी को इतने से सन्तोष नहीं हुआ। आपने आर्य समाज की स्थापना करते समय नियमोपनियमों में लिखा-'हर एक आर्य को संस्कृत के साथ आर्यभाषा हिन्दी अवश्य सीखनी चाहिए।' आर्यसमाजी चाहे वे उत्तर में हों, चाहे दक्षिण में, पूर्व में हों, चाहे पश्चिम में, देश में हो चाहे विदेश में-उन्हें हिन्दी का पर्याप्त ज्ञान अवश्य होगा। महर्षि ने हिन्दी को 'आर्यभाषा' लिखकर अपने हिन्दी प्रेम का सुन्दरतम उदाहरण उपस्थित किया है।

वर्तमान में अहिन्दी-क्षेत्रों में राष्ट्र भाषा हिन्दी-विरोधी जो आन्दोलन चलाए जा रहे हैं, उनके पीछे कुछ राजनैतिक नेताओं का स्वार्थ निहित है। कोई भी राष्ट्रवादी व्यक्ति ऐसे आन्दोलनों को पसन्द नहीं करेगा। आन्दोलन के कारण हमें यह नहीं समझना चाहिए कि वहां के लोग हिन्दी-भाषा को नहीं चाहते।

वास्तव में तो हिन्दी को इतना गौरवशाली पद दिलाने का सौभाग्य अहिन्दी-भाषी क्षेत्र के महर्षि दयानन्द, गांधी जी, राजा राममोहन राय, लोकमान्य तिलक, सुभाष बाबू, विनोबा भावे, वीर सावरकर आदि महानुभावों को ही प्राप्त है।

गो-प्रेम-

महर्षि दयानन्द गाय की धार्मिक भावना को इतना महत्त्व नहीं देते थे, जितना कि आर्थिक पक्ष को। आपने अपने सवा सौ वर्ष पूर्व के युग में, जब भारत पर अंग्रेजों का प्रभुत्व था-गोरक्षा-सम्बन्धी आन्दोलन चलाया और दो करोड़ हस्ताक्षर कराकर अंग्रेज अधिकारियों से गौ-हत्या बन्द कराने की मांग की। आपने अपने आर्थिक दृष्टिकोण को उपस्थित करते हुए कहा-''गाय हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, पारसी के लिए परमात्मा द्वारा समानरूप से प्रदान किया हुआ प्राणी है, जो उसकी जितनी सेवा करेगा, उसको वह उतना ही लाभ देगी।'' आपने अपनी दलील में आगे कहा-''गाय की हत्या करने से, उसके मांस से ७०-७५ व्यक्ति एक समय भूख मिटा सकेंगे, परन्तु यदि उसे जीवित रखा गया तो वर्षों तक असंख्य लोग उसके अमृतरूपी-घी, दूध, छाँछ से लाभ उठा सकेंगे। आपने इस सम्बन्ध में एक बहुत ही सुन्दर खोजपूर्ण पुस्तक 'गो-करुणानिधि' लिखी है। आप सिर्फ़ गो-हत्या बन्द कराने के लिए आन्दोलन ही नहीं करते थे, किन्तु आपने इस पशुधन की रक्षा के लिए कई स्थानों पर गौशालाएँ स्थापित कीं। आपने सर्वप्रथम गौशाला रिवाड़ी में स्थापित की।

अछूत एवं नारी-जाति के उद्धारक-

महर्षि जी के युग में अछूतों और नारी-जाति को नीच कोटि का समझा जाता था। उन्हें वेद-शास्त्रों के अध्ययन-अध्यापन का कोई अधिकार नहीं दिया जाता था। आपने इस अन्याय के विरुद्ध आन्दोलन चलाते हुए कहा-''जैसे परमात्मा द्वारा दिए हुए सूर्य के प्रकाश, जलवायु आदि का सबको उपभोग करने का अधिकार है-चाहे वह ब्राह्मण हो, चाहे भंगी, चाहे वह अमीर हो, चाहे गरीब हो, चाहे वह स्त्री हो या पुरुष, इसी प्रकार परमात्मा द्वारा दिया हुआ वेदों का ज्ञान भी सब के लिए समान है।''

आपके अनुयायियों में सर्वप्रथम राजऋषि स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने जालंधर में तथा तपोमूर्ति पण्डित आनन्दप्रिय जी ने आर्यकुमार महासभा के अन्तर्गत बड़ौदा में अछूतोद्धार और नारी-जाति के उद्धार के लिए कार्य किया। आजकल दोनों स्थानों पर बड़े सुन्दर कन्यागुरुकुल तथा महाविद्यालय चलाए जा रहे हैं। इन दोनों शिक्षा-केन्द्रों से शिक्षा-प्राप्त कन्याएं इस समय भारत की लोकसभा तथा राज्य-सभा में उच्च स्थानों पर अपनी सेवाएं दे रही हैं।

सम्प्रदायवाद-विरोधी-

महर्षि दयानन्द विश्व में अशान्ति का मूल कारण सम्प्रदायवाद को समझते थे। सम्प्रदायवाद एक ऐसा रोग है जो कभी किसी भी जाति अथवा राष्ट्र को शान्ति से नहीं रहने देता। इसका मुख्य काम है-एक दूसरे सम्प्रदाय एवं राष्ट्र से घृणा पैदा करना। इसका नाश महर्षि ने परमावश्यक समझा। वे जानते थे कि जब तक सम्प्रदायवाद रहेगा, तब तक विश्व में शान्ति कठिन है। आपने अपने विचार रखते हुए कहा-''आज मानव शान्ति चाहता है, परन्तु शान्ति तब तक नहीं आएगी, जब तक इन्सानों के चलाए हुए मत-सम्प्रदाय इस पृथ्वी पर रहेंगे। कारण, ये मत-सम्प्रदाय एक दूसरे से घृणा करते नज़र आ रहे हैं। जो घृणा सिखाता हो, वह धर्म का स्थान नहीं ले सकता।'' आपने बताया कि ''सृष्टि रचना के पश्चात् परमात्मा ने मानवजाति के ज्ञान के लिए वेदों का ज्ञान दिया। वेद न सिर्फ़ हिन्दुओं के लिए हैं, परन्तु मानवमात्र के लिए परमात्मा द्वारा दिया हुआ ज्ञान है। उसमें न ईर्ष्या है, न घृणा को ही स्थान है। वेद सबकी भलाई चाहता है। वेद ही इस पृथ्वी पर प्राचीन पवित्र ग्रन्थ है। उसकी वाणी न सिर्फ़ आर्यों के लिए है, परन्तु ईसाइयों और मुसलमानों को भी उस पवित्र ग्रन्थ पर पूरा समानाधिकार है।'' आपने कहा-''हमें विश्व में शान्ति लानी है तो विश्व भर के लोगों का एक धर्म हो, एक धर्मग्रन्थ हो, एक ईश्वर-पूजा की विधि हो, एक विश्वचक्रवर्ती राज्य हो, उसका एक ही राष्ट्र-ध्वज हो, एक भाषा हो। और, एक ही मान्यता जब तक नहीं होगी, तब तक विश्व में शान्ति सम्भव नहीं।''

चरित्रहीनता का विरोध करते मौत-

चरित्रहीनता और पाखण्ड के

(शेष पृष्ठ 7 पर)

संत शिरोमणि पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी का 119वां निर्माण दिवस

13 अप्रैल 2019 को दयानन्द मठ दीनानगर में संत शिरोमणि स्वामी सर्वानन्द सरस्वती जी का 119वां निर्माण दिवस पूज्य स्वामी सदानन्द सरस्वती अध्यक्ष दयानन्द मठ दीनानगर जी की अध्यक्षता में बड़ी श्रद्धा व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। ध्वजारोहण करते हुये दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी एवं अन्य जबकि चित्र दो में डा. सोमदेव जी बम्बई को सम्मानित करते हुये बलविन्द्र शास्त्री जी एवं अन्य। चित्र तीन में उपस्थित सन्यासी वर्ग एवं अन्य।

13 अप्रैल 2019 को दयानन्द मठ दीनानगर में संत शिरोमणि स्वामी सर्वानन्द सरस्वती जी का 119वां निर्वाण दिवस पूज्य स्वामी सदानन्द सरस्वती अध्यक्ष दयानन्द मठ दीनानगर जी की अध्यक्षता में बड़ी श्रद्धा व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इससे पूर्व 1 अपैल से 12 अप्रैल तक दीनानगर के आसपास के इलाकों में वैदिक धर्म के संदेश को घर घर तक पहुंचाने के लिये वेद प्रचार यात्रा का आयोजन किया गया जिसमें लगभग 60 आर्य सन्यासियों ने विद्वानों व आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, राजस्थान आदि के विद्वानों ने महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के संदेश को घर घर पहुंचाने का प्रयास किया। 12 अप्रैल को दोपहर बाद वैदिक यति मंडल की बैठक का आयोजन किया गया जिसमें सारे भारत से आए यतिमंडल के सदस्यों ने वेद प्रचार में आ रही कठिनाइयों के बारे में अवगत कराया। 13 अप्रैल को स्वामी जी का जन्म वेद सम्मेलन के रूप में मनाया गया। सर्वप्रथम प्रात: 8.00 बजे से 9.00 बजे तक अथर्ववेद परायण यज्ञ की पूर्णाहुति डाली गई जिसमें यज्ञ में श्रद्धा रखने वाले सैकडों नर नारियों ने पूर्णाहुति डाल कर अपने आप को सौभाग्यशाली समझा। ध्वजारोहण प्रात: 10.00 बजे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने किया। ध्वजारोहण के समय ओ३म का झंडा ऊंचा रहे हमारा, वैदिक धर्म की जय के जयघोषों से सारा आकाश गुजायंमान हो गया। इसके पश्चात वेद सम्मेलन प्रारम्भ हुआ जिसमें पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, झारखंड, उत्तराखंड, उड़ीसा के वानप्रस्थी, ब्रह्मचारी, विद्वानों ने भाग लिया। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के वरिष्ठ उप प्रधान श्री सरदारी लाल जी आर्य रत्न, आर्य विद्या परिषद पंजाब के रजिस्ट्रार श्री अशोक परूथी जी एडवोकेट, श्री सुदेश कुमार जी मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब उपस्थित थे।

सभी आर्य विद्वानों ने अपने अपने ओजस्वी व्याख्यानों व शिक्षा प्रद उद्बोधन से पधारी हुई आर्य जनता को आर्य समाज के सिद्धान्तों व ऋषि के संदेश के बारे में नई स्फूर्ति का संचार किया। इस अवसर पर स्वामी सदानन्द जी ने दयानन्द मठ दीनानगर की तरफ से पिछले वर्ष की भान्ति इस वर्ष भी वेद के प्रचार प्रसार में अधिक योगदान देने वाले तीन विद्वानों को धन व प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। उनमें प्रसिद्ध आर्य विद्वान डा. सोमदेव जी बम्बई, आर्य जगत के विख्यात भजनोपदेशक पंडित नरदेव जी राजस्थान तथा प्रकाण्ड विद्वान आचार्य वेदप्रिय जी थे।

अंत में स्वामी सदानन्द जी महाराज ने इस कार्यक्रम में आए हुये सभी आर्य जनता का धन्यवाद किया। इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिये बलविन्द्र शास्त्री, दिनेश शास्त्री, किशोर शास्त्री तथा प्रिंसीपल आर.के. तुली जी का विशेष योगदान रहा।

पृष्ठ 2 का शेष-परमात्मा की स्तुति...

लोगों, सब पदार्थों और सब दिशाओं में है, उस जगदीश्वर को हमारा नमस्कार है।''-अथर्ववेद, काण्ड-३, सूक्त-२१, मन्त्र-७।।

जो लोग परमात्मा की भक्ति की ओर झुकते हैं, उन्हें क्रमश: सांसारिक धनादि पदार्थों में वैराग्य भाव उत्पन्न हो जाता है और वे उन धनादि पदार्थों का सत्पात्रों में दान करने के लिये प्राय: त्याग किया करते है। ध्वन करते समय, प्रत्येक मन्त्र के अन्त में ''स्वाहा'' तथा ''इदन्न-मम'' बोलने का अर्थ दान-त्याग ही है। त्यागशील वाणियां वायुमण्डल को अलंकृत करते हुए परमात्मा के समीप ही जाकर ठहरती हैं। पर सेवा के लिये स्वार्थ-भाव का त्याग कर देना, विश्व का भरण-पोषण करना, इन सबको करने से परमात्मा हमसे प्रसन्न होता है एवं हमारी रक्षा भी करता है। सब पदार्थों की सिद्धि का मुख्य हेतु जो प्राण है, उसको प्राणायम की रीति से हम मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं। परमात्मा वेदविद्या द्वारा दु:ख और दरिद्रता हटाकर हमें मोक्ष पद प्रदान करता है। वह ही वेदों द्वारा हृदय को शुद्ध करके ऋचाओं से स्तुति किया जाता है। ''हे मन्त्रों से स्तुति करने योग्य, ऐश्वर्यशाली पदार्थों के रक्षक ईश्वर! हम भी तेरी ही स्तुति करने वाले हैं। तू हमें तृप्त कर।''-सामवेद।। प्रत्येक जीव को परमात्मा की स्तुति में अपने मन को स्थिर रखना चाहिये।

जिस प्रकार समुद्र विभिन्न प्रकार के रत्न धारण किये हुए है, उसी प्रकार विद्वान् लोग अपनी-अपनी बुद्धि से परमात्मा जैसे रत्न की खोज करते हैं। खोजने वालों को उत्तम रत्न बनकर परमात्मा अपना साक्षात्कार उपलब्ध कराता है। जैसे परमात्मा नास्तिकों का दुष्टव्यवहार सहता है, वैसे ही सुख-दु:ख, लाभ-हानि, सर्दी-गर्मी, भूख-प्यास और युद्ध आदि को सहने की शक्ति हमें भी प्रदान करता है। ''हे परमेश्वर! तेरे बल को जानता हुआ मैं, पापनाशक तुझ प्रभु की वेदवाणियों तथा स्तुतियों का परित्याग नहीं करता। हे स्वयं महान् यशस्विन्! मैं सदा तेरा नाम लेता हूँ।''-सामवेद

परमात्मा ही सबके लिए वेदों द्वारा ज्ञान का दाता, सबका कर्मफलप्रदाता, सर्वत्र व्यापक होता हुआ सबको धारण करने वाला है, योगयज्ञ को संवारने वाला, वही हमारी उपासना के सुन्दर फल का सम्पादक है, उसी की हम भक्ति करें, स्तुति करें।

पृष्ठ 6 का शेष-महान् क्रान्तिकारी महर्षि दयानन्द

महर्षि जी बहुत विरोधी थे। इसके कारण आफको कई बार ज़हर भी दिया गया, विविध प्रकार के कष्ट भी दिए गए। परन्तु आपने सब को दया तथा ब्रह्मचर्य के बल से असफल कर दिया। अन्तिम दिनों में आप जोधपुर में प्रचारार्थ गए हुए थे। जोधपुर नरेश के आप मेहमान थे। एक दिन आपने एक मुसलमान वेश्या को राजा के महल में पालकी में जाते हुए देख लिया। आपने महाराजा को बुलाकर फटकारते हुए कहा-

''जिस प्रजा के राजा ऐसे चरित्रहीन होंगे, उसकी प्रजा का क्या होगा? कहाँ तू राजपूत शेर, और कहाँ तूने एक कुतिया का संग कर रखा है।''

महर्षि जी के इन शब्दों ने महाराजा पर असर किया। वेश्या का महल में आना-जाना बन्द हो गया। उस वेश्या ने चिढ़ कर महर्षि को, उनके जगन्नाथ नाम के रसोइये द्वारा दूध में जहर के साथ बारीक कांच पीस कर दिला दिया। ज़हर एवं कांच ने अपना प्रभाव शरीर पर डालना शुरू किया। नेवली किया से ज़हर को हजम करने की कोशिश की, परन्तु कांच अपना काम करने लगा। हालत बिगड़ने लगी। शरीर पर छाले होने लगे। आग्रह पर आपको माऊंट आबू ले लिया गया, ताकि ठंडक में ज़हर का प्रभाव कम हो जाए, परन्तु वहां अंग्रेज-सरकार ने इस क्रान्तिकारी संन्यासी को अपने मार्ग में रोड़ा समझकर डाक्टरों द्वारा इसे-हटाना चाहा। डाक्टरों ने अंग्रेज अधिकारियों के इशारे पर अपने हाथों की सफ़ाई दिखाई। महर्षि की हालत ख़तरनाक रूप धारण करने लगी। आप को शिष्यगण अजमेर ले गये। वहां ज़हर देने के ठीक एक मास पश्चात् दीपावली के दिन सांयकाल जब लोग मिट्टी के दीपकों में तेल डालकर अपने धर द्वारों पर दीपक जला रहे थे, तब ये महान् ज्योतिर्मय दीपक अपने जीवन-रूपी दीपक के, ज्ञानरूपी प्रकाश द्वारा अंधकार में भटकने वाले मानवों को प्रकाश-पथ बता, ''प्रभु तेरी इच्छा पूर्ण हो'', कहकर सदा के लिए उस अनन्त प्रभु की गोद में चले गए।

आर्य समाज श्रद्धानंद बाजार अमृतसर का 101 वां स्थापना दिवस धूमधाम से मनाया

आर्य समाज बाजार श्रद्धानंद अमृतसर का 101वां स्थापना दिवस दिनांक 28 अप्रैल 2019 दिन रविवार को बड़ी धूमधाम एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी ज्योति प्रज्वलित कर समारोह का शुभारम्भ करते हुये जबकि चित्र दो में आर्य समाज के पदाधिकारी सभा महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी को सम्मानित करते हुये। चित्र तीन में उपस्थित जनसमूह।

आर्य समाज बाजार श्रद्धानंद अमृतसर का 101वां स्थापना दिवस दिनांक 28 अप्रैल 2019 दिन रविवार को बड़ी धूमधाम एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.)के महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी ने की। इससे पूर्व प्रात: 9.00 बजे आर्य समाज की पावन यज्ञशाला में वेदों की पावन ऋचाओं से संसार का सर्वश्रेष्ठ कर्म यज्ञ किया गया। यज्ञ में मुख्य यजमान के पद को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री सुरेश चन्द्र गुप्ता एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती प्रेम गुप्ता ने सुशोभित किया। यज्ञ के प्रति आस्थावान इस परिवार को विद्वानों द्वारा आशीर्वाद दिया गया।

यज्ञ के पश्चात मुख्य कार्यक्रम का शुभारम्भ श्री प्रेम भारद्वाज जी महामंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब एवं माता जगदीश रानी आर्या के कर कमलों द्वारा ज्योति प्रज्वलित करके किया गया। सर्वप्रथम श्री सुरेन्द्र गुलशन के मधुर भजनों ने समय बांध दिया। उन्होंने देशभक्ति के भजन सुना कर सभी को भावुक कर दिया। लोगों ने तालियां बजा कर उनका उत्साहवर्धन किया।

इसके पश्चात आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उपदेशक श्री नारायण सिंह जी ने अमृतसर के आर्य समाजियों को उनके गौरवमयी इतिहास को याद करवाते हुये कहा कि जब स्वामी श्रद्धानंद जी कांग्रेस अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष बने तो आर्य समाज ने उन्हें पूर्ण सहयोग दिया। वह कांग्रेस का अधिवेशन नहीं था वह तो आर्य समाज का अधिवेशन था जिसे स्वामी श्रद्धानंद ने पूर्ण सफल बनाया। उन्होंने कहा कि वैदिक धर्म की बलिवेदी पर अपना सर्वस्व अर्पण करने वाले अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द का नाम और उनके द्वारा किए गए कार्य हमेशा आर्य जगत् के लिए प्रेरणा के स्रोत रहेंगे। स्वामी श्रद्धानन्द जहाँ कर्मक्षेत्र के अद्वितीय योद्धा थे, वहां वे एक सफल लेखक और साहित्यकार भी थे। कर्मठता एवं बौद्धिकता का ऐसा समन्वय प्राय: बहुत कम लोगों में दिखाई देता है।

अन्त में अपने अध्यक्षीय भाषण में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी ने आर्य समाज बाजार श्रद्धानंद अमृतसर को अपना 101वां स्थापना दिवस मनाने पर बधाई दी। उन्होंने कहा कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब यह हर संभव कोशिश कर रही है कि वह हर आर्य समाज के उत्सव में पधारे। उन्होंने आर्यों को एकजुट होकर कार्य करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि यदि हमारा संगठन मजबूत होगा तो आर्य समाज भी मजबूत होगा इसलिये हमें अपने संगठन को मजबूत करना है। इस समय आर्य समाज के सामने जो नई चुनौतियां हैं उनका मुकाबला आर्य समाज एक मजबूत संगठन बना कर ही कर सकता है। उन्होंने कहा कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के नेतृत्व में पंजौड़ के नजदीक एक विशेष स्तर का केन्द्र का निर्माण आरम्भ हो गया है जिसमें आर्य समाज के विद्वान तैयार किए जाएंगे और इसके साथ ही कई तरह की योजनाएं को प्रारम्भ किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि ऋषि कृत ग्रंथ जो मानव जाति के कल्याणकारी बन सकते हैं तथा आधुनिक युग में शोध कार्यों के आधार पर भी उन ग्रंथों को एक ही स्थान पर रख कर उनका अध्ययन करवाया जायेगा ताकि आर्य समाज में वैदिक विद्वान आर्य समाज के प्रचार प्रसार में सहयोग कर सकें। उन्होंने कहा कि महाशय धर्मपाल जी के सान्निध्य में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत देश में आर्य परिवारों के होनहार छात्रों को प्रशासनिक सेवाओं के लिये तैयार किया जाएगा। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी के अमृतसर पधारने पर वहां की आर्य समाजों में भारी उत्साह था। इस अवसर पर गुरुकुल करतारपुर के प्राचार्य उदयन आर्य अपने ब्रह्मचारियों के साथ उपस्थित हुये। मंच का संचालन वैदिक प्रवक्ता डा. पवन त्रिपाठी जी ने किया। आर्य समाज के प्रधान श्री शशि कोमल एवं महामंत्री श्री पुरुषोत्तम चंद शर्मा जी ने आए हुये सभी मेहमानों का धन्यवाद किया। इस अवसर पर अमृतसर की सभी आर्य समाजों के पदाधिकारियों ने भाग लिया जिनमें आर्य समाज पुतलीघर अमृतसर के प्रधान श्री इन्द्रजीत तलवाड़ एवं (शेष पृष्ठ पाँच पर)

दयानन्द मठ ढन मुहल्ला में महर्षि दयानन्द सरस्वती जीवन सचित्र संग्रहालय का शुभारम्भ

महर्षि दयानन्द मठ, ढन मुहल्ला जालन्धर में विगत दिनों महर्षि दयानन्द सरस्वती जीवन सचित्र संग्रहालय का शुभारम्भ किया गया। इस अवसर पर ज्योति प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया जबकि चित्र दो में महर्षि दयानन्द सरस्वती जीवन सचित्र संग्रहालय का उद्घाटन करते हुये महात्मा चैतन्य मुनि जी एवं ट्रस्ट प्रधान श्री ओम प्रकाश अग्रवाल।

दिनांक 14.04.2019 दिन रविवार को वैशाख संक्रान्ति के पावन अवसर पर महर्षि दयानन्द सरस्वती जीवन सचित्र संग्रहालय का पवित्र शुभारम्भ बहुत ही हर्षोल्लास, धूमधाम एवं श्रद्धापूर्वक किया गया। सर्वप्रथम सृष्टि का श्रेष्ठतम कर्म हवन यज्ञ किया गया। यज्ञ ब्रह्मा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के युवा विद्वान श्री सुरेश शास्त्री जी ने सभी यजमानों एवं सारी संगत से छ: हवन कुंडों में पवित्र आहुतियां डलवाई। यजमानों की भूमिका श्री अशोक परूथी जी एडवोकेट रजिस्ट्रार आर्य विद्या परिषद पंजाब, श्रीमती सुशीला भगत, रीटा भगत, श्री मनोज कपूर, श्रीमती नीरू कपूर, अजय महाजन, ऊषा महाजन, अमित चौहान, पूजा चौहान, श्री ओम प्रकाश अग्रवाल, श्री कैलाश गुप्ता, आनन्द किशोर आनन्द, हरीश भंडारी, नीलम भंडारी, मोहित आनन्द, विभा आनन्द, प्रदीप भंडारी, संगीता भंडारी, जगमोहन भंडारी, श्री संतोष बांसल, सरोज बांसल, गरिमा तलवाड़, हिन्द पाल सेठी, रजनी सेठी, श्री निर्मल आर्य, पूनम आर्य, श्रीमती रजनी चावला, डा. सुधीर चौधरी, रमा चौधरी, श्री जगमोहन भंडारी, श्रीमती कुसुम भंडारी, विक्रम कपिला एवं श्रीमती सुनीता ने बड़ी ही श्रद्धा के साथ निभाई। यज्ञोपरान्त यज्ञ प्रार्थना, आशीर्वाद, प्रसाद वितरण के साथ सभी यजमानों को सम्मानित किया गया। उसके बाद श्रद्धेय महात्मा चैतन्य मुनि जी के नेतृत्व में ट्रस्ट प्रधान श्री ओम प्रकाश अग्रवाल एवं वरिष्ठ उप प्रधान श्री कैलाश गुप्ता जी ने अपने कर कमलों से गणमान्य आर्यजनों के साथ माता सत्यप्रिया यति जी की उपस्थिति में स्वामी दयानन्द सरस्वती जीवन सचित्र संग्रहालय (शेष पृष्ठ चार पर)

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।